।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

● विक्रम संवत 2081 आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्दशी, 16-31 अक्टूबर 2024 (16 - 31 Oct. 2024), ● वर्ष 4 (Year-4), ● अंक 11 ● पृष्ठ 4 (Page-4) ● मूल्य रु. 2

खांसी की दवा है या नशे का सामान?

बांग्लादेश में भारतीय कफ सिरप की डिमांड, बीएसएफ ने 3 हजार बोतलें की जब्त

- भारत से बांग्लादेश के लिए कफ सिरप की तस्करी की जा रही है
- भारतीय कफ सिरप का नशा करने के लिए भी इस्तेमाल हो रहा
- पिछले दो महीनों में बीएसएफ ने डेढ़ करोड़ रुपये से अधिक की कफ सिरप जब्त की

नई दिल्ली : भारत से बड़ी संख्या में बांग्लादेश के लिए कफ सिरप की तस्करी की जा रही है। भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर तस्करी की कोशिश करते हुए पकड़े गए तस्करों ने बीएसएफ अधिकारियों को बताया कि भारतीय कफ सिरप का बांग्लादेश में कई तरह से इस्तेमाल किया जा रहा है। यह खांसी सही करने के लिए तो है ही, साथ ही कुछ लोग इसे नशा करने के लिए भी पी रहे हैं। इससे पश्चिम बंगाल के रास्ते बड़ी संख्या में भारत से बांग्लादेश के लिए कफ सिरप की स्मगलिंग की जा रही है।

हाल यह है कि दो महीने में ही डेढ़ करोड़ रुपये से अधिक का कफ सिरप जवानों ने जब्त किया है। जबकि जो पकड़ा नहीं गया उसकी कीमत पकड़े गए कफ सिरप से कहीं अधिक मानी जा रही है। 29 अक्टूबर को पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना और मालदा जिलों के अंतर्गत भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर तैनात बीएसएफ के जवानों ने अलग-अलग ऑपरेशन में तीन हजार से अधिक कफ सिरप की बोतलें जब्त की हैं। बीएसएफ दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के अधिकारियों का कहना है कि भारत-बांग्लादेश सीमा पर बड़ी मात्रा में मादक पदार्थों की तस्करी करने की कोशिश की जा रही है। इसमें बांग्लादेश में भारतीय कफ सिरप की जबरदस्त डिमांड है। कुछ दिन पहले ही मुर्शिदाबाद जिले में बीएसएफ ने मुरुटिया पुलिस के साथ मिलकर कफ सिरप की 13 हजार 602 बोतल जब्त की थीं। बीएसएफ साउथ बंगाल के डीआईजी एस. के. पांडे ने बताया कि इस तरह की तस्करी को देखते हुए भारत-बांग्लादेश सीमा और आसपास के इलाकों में निगरानी और अधिक बढ़ा दी गई है। बीएसएफ जवान इलाके पर सक्रिय रूप से नजर रख रहे हैं। जवान यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि देश की सीमा सुरक्षित रहे।

बांग्लादेश में तस्करी किए जाने की वजह से आमतौर पर बांग्लादेश बॉर्डर से लगते भारतीय इलाकों के मेडिकल स्टोर पर कफ सिरप लगभग आउट ऑफ स्टॉक ही रहता है। पश्चिम बंगाल में इसकी जबर्दस्त डिमांड रहती है। तस्करी करने वाले मेडिकल स्टोर वालों और सप्लायर को भी इसकी एमआरपी से अधिक दाम देते हैं। इसके बावजूद भी बांग्लादेश में इसकी बहुत अधिक डिमांड रहती है। मालूम रहे कि भारत में ऐसी अनेक घटनाएं घटती रहती हैं, जो कफ सिरप को उपयोग नशे के रूप में किया जा रहा है। इस कारण कुछ सिरपों की बिक्री पर पाबंदी भी लग चुकी है।

बंगाल के प्रसिद्ध रसगुल्ले को विदेश भेजने के लिए डाक विभाग ने शुरू की विशेष कुरियर सेवा

कोलकाता : पश्चिम बंगाल के प्रसिद्ध रसगुल्ले और अन्य मिठाइयों को विदेश भेजने के लिए भारतीय डाक विभाग ने विशेष पहल की है। इसके लिए विशेष कुरियर सेवा की शुरुआत की गई है। भारतीय डाक विभाग के पश्चिम बंगाल सर्कल द्वारा शुरू की गई विशेष कुरियर सेवा का लाभ उठाकर अब बंगाल के लोग अपने प्रियजनों को विदेशों में यहां के पसंदीदा मिठाई भेज सकेंगे। पैक्ड रसगुल्ले भेजने के लिए पैकेजिंग की जिम्मेदारी भेजने वाले की होगी। विभाग के पश्चिम सर्कल के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कुछ निजी कुरियर सेवा कंपनियां पहले से ही पैक्ड मिठाइयों की खेप विदेश भेजने के लिए सेवा की पेशकश कर रही हैं। हालांकि उनके द्वारा ली जाने वाली दरें काफी अधिक हैं। भारतीय डाक विभाग के पश्चिम बंगाल सर्कल द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं निजी संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली दरों की तुलना में काफी सस्ती होंगी। उन्होंने दावा किया कि विभाग इस परियोजना को रसगुल्लों के साथ जोड़ कर लोकप्रिय बना रहा है, लेकिन इस पसंदीदा बंगाली मिठाई को मिली वैश्विक प्रशंसा को देखते हुए कोई भी राज्य से अन्य लोकप्रिय मिठाइयां अपने प्रियजनों को भेज सकता है। डाक विभाग के अधिकारी ने कहा कि यहां तक कि घर की बनी मिठाइयां, जो त्योहारी सीजन के दौरान काफी आम हैं, उन्हें भी इस विशेष सेवा के माध्यम से विदेश भेजा जा सकता है। एकमात्र शर्त यह है कि भेजने वाले को इसकी पेशेवर पैकेजिंग की व्यवस्था करनी होगी।

उल्लेखनीय है कि पहले भी कई ऐसे उदाहरण सामने आए हैं, जब भारतीय डाक विभाग ने खुद को रसगुल्ले की वैश्विक लोकप्रियता से जोड़ा था। जनवरी 2018 में विभाग ने बंगाल के प्रतिष्ठित मिठाई निर्माता नबीन चंद्र दास को 1868 में एक टिकट और विशेष कवर के साथ रसगुल्ला निर्माता के रूप में स्वीकार किया था

न्याय का शासन स्थापित करना जरूरी : जगद्गुरु शंकराचार्य

कोलकाता : आर जी कार प्रसंग पर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज ने व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि पहले भी बहुत कुछ कहा जा चुका है कि ऐसी घटना कभी भी वांछनीय नहीं है लेकिन उनका मानना है कि इस घटना पर त्वरित कार्रवाई करने की जरूरत थी। उन्होंने कहा कि ऐसी घटना घटित होनी भी गलत है और घटना घटित होने के बाद उसे छिपाना या प्रमाण को सबूत को मिटाना भी सबसे बड़ी भूल है। ऐसी घटनाओं को कभी भी स्वीकार नहीं किया जा सकता. न्याय का शासन स्थापित करना जरूरी है ताकि लोग समझें कि शासन कायम है, अन्यथा सरकार चाहे कितनी भी मजबूत क्यों न हो गिर जाती है।

जब लोगों को एहसास होता है कि कोई लेना-देना नहीं है। चाहे वह ममता बनर्जी की सरकार ही क्यों न हो. इस बारे में ममता बनर्जी सरकार को गंभीरता से सोचना चाहिए.वही दूसरी ओर, जगतगुरु शंकराचार्य ने गाय को राष्ट्रमाता घोषित नहीं करने पर पूर्व और वर्तमान केंद्र की दोनों सरकार के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया.

महालय के दिन दुर्गा पूजा मंडप का उद्घाटन करने पर जगतगुरु शंकराचार्य ने ममता बनर्जी का नाम लिए बिना कटाक्ष किया,. कई लोग राजनीतिक कारणों से ऐसा कर रहे हैं, जो कि नियमानुसार होना चाहिए.

इसके अलावा उन्होंने कहा कि गाय को दिए जाने वाले पशु के दर्जे को हटाकर उसे राष्ट्र गौमाता का दर्जा दिया जाना चाहिए, इसीलिए, उन्होंने अयोध्या से शुरुआत की और विभिन्न प्रांतों का अब तक दौरा किया.

उन्होंने कहा कि बहुत पहले कांग्रेस की सरकार थी, लेकिन गौमाता को दर्जा नहीं मिलसका, फिर गठबंधन की सरकार आई और वह भी नहीं दे सकी. अब बीजेपी की सरकार है पर वह भी अब इस मुद्दे पर पिछे हैं। अगर उन्होंने गंभीरता से कुछ नहीं किया तो उनका समय आ जाएगा.

उन्होंने कहा कि शहर से गायो को हटा दी गई है, उन्हें तड़ीपार घोषित किया गया है, इस तरह की सजा उन अपराधीयो को दिया जाता है जिसके समाज में रहने से कोई अहित हो, गाय की क्या अपराध है हमें बताएं अन्यथा हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे।उन्होंने कहा कि हम कह रहे हैं कि भारतीय संविधान के मुताबिक गाय का सम्मान होना चाहिए। संविधान का पालन नहीं किया जा रहा है देश को संविधान से चलाया जाता है और इस तरह से संविधान का उल्लंघन किया जा रहा है. हालांकि, अशोक स्तंभ पर बिराए का निशान आज भी है। लेकिन जिस तरह से गोमांस को टुकड़ों में काटकर यहां से तस्करी की जा रही है, उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। बंगाल से तो जीवित गायों की तस्करी बांग्लादेश की जाती है.

जगद्गुरु शंकराचार्य ने और कई सारी बातें कही।वह आज हावड़ा के रामराजतला इलाके में स्थित शंकर मठ में उपस्थित हुए थे और वहां भक्तिभाव के साथ गौ ध्वज स्थापित किया गया.

मस्तिष्क को भी प्रभावित कर सकता है प्रदूषण, जल्दी दिखने लगता है बुढ़ापा

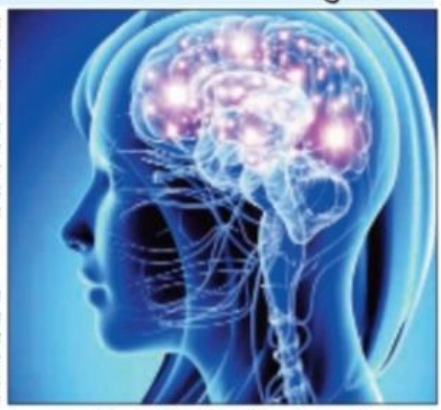

नई दिल्ली : राजधानी की आबोहवा इन दिनों सांस लेने के योग्य नहीं है। यहां के लोग पिछले कई सालों से प्रदूषण की यह मार झेल रहे हैं। डॉक्टर बताते हैं कि प्रदूषण त्वचा से लेकर शरीर के सभी महत्वपूर्ण हिस्से को प्रभावित करता है। फेफड़े और दिल के अलावा मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है।

हो सकती है सिर दर्द की समस्या

इस वजह से प्रदूषण बढ़ने पर लकवा होने का खतरा रहता है। इसके अलावा विदेश में हुए शोध में यह बात भी सामने आई है कि लंबे समय तक प्रदूषित वातावरण में रहने पर बुढ़ापा का असर जल्दी दिख सकता है। इसलिए प्रदूषण समय से पहले बुढ़ापे का असर दिखने का वजह बन सकता है। डॉक्टरों के अनुसार प्रदूषण त्वचा, आंख, सांस की नली, फेफड़ा, हृदय व मस्तिष्क को प्रभावित करता है। इसके दुष्प्रभाव से सिर दर्द की समस्या हो सकती है। धमनियों में ब्लाकेज होने से लकवा की आशंका शालीमार बाग स्थित फोर्टिस अस्पताल के न्यूरोलाजी विभाग के निदेशक डा. जयदीप बंसल ने कहा किप्रदूषण के कारण मस्तिष्क के नसों में प्रेशर पड़ता है। इस वजह से सिर दर्द की समस्या होती है। इसके अलावा प्रदूषण के कारण धमनियों में ब्लाकेज होने से लकवा की आशंका बढ़ जाती है। आरएमएल अस्पताल के त्वचा रोग विशेषज्ञ डा. कबीर सरदाना ने कहा कि वैसे तो प्रदूषण का गंभीर तात्कालिक असर सबसे पहले फेफड़े पर पड़ता है। इसके बाद दिल की बीमारी होती है।

चेहरे पर मुहासे की समस्या- वहीं प्रदूषण के दुष्प्रभाव से त्वचा पर शुरुआत में एलर्जी, एक्जिमा व चेहरे पर मुहासे की समस्या होती है। लंबे समय तक प्रदूषित वातावरण में रहने पर त्वचा झुर्राई हो जाती है। इससे त्वचा की रंगत खोने लगती है। इस वजह से पीड़ित व्यक्ति अपने वास्तविक आयु से अधिक उम्र का दिखने लगता है। चीन में पिछले साल एक अध्ययन हुआ है। जिसमें यह पाया गया है कि प्रदूषण भरे वातावरण में लंबे समय तक रहने वाले लोग समय से पहले बूढ़े दिखने लगे। इसका कारण यह है कि प्रदूषण बढ़ने पर पीएम-10, पीएम- 2.5, सल्फर डाइआक्साइड सांस के जरिये शरीर में पहुंचने पर इंफ्लामेट्री मार्कर बढ़ जाते हैं। इसका त्वचा पर भी नुकसान होता है।

फेफड़े के कैंसर का बन सकता है कारण- फोर्टिस अस्पताल के पल्मोनरी मेडिसिन विभाग के विशेषज्ञ विकास मौर्या ने कहा कि प्रदूषण फेफड़े को सबसे अधिक प्रभावित करता है। इसलिए ब्रोंकाइटिस, अस्थमा व निमोनिया जैसी बीमारियां बढ़ जाती हैं। पीएम-2.5 फेफड़े के जरिये ब्लड में पहुंच जाता है, जो धमनियों में ब्लाक का कारण बन सकता है। इससे हार्ट अटैक का खतरा रहता है। लंबे समय तक प्रदूषण भरे वातावरण में रहने पर फेफड़े का कैंसर होने का खतरा रहता है। इसके अलावा बच्चों के फेफड़े का विकास प्रभावित होता है। इसलिए प्रदूषण से बचाव के लिए एन 95 मास्क पहनकर ही बाहर निकलना चाहिए।

दिवाली अमावस्या को ही मनाना चाहिए

कोलकाता : हमेशा दिवाली अमावस्या में ही मनाई जाती है. यह अमावस्या की रात में मनाने का त्योहार है. दीपोत्सव को रात में ही मनाया जाता है. 31 अक्टूबर 2024 यानी बृहस्पतिवार को अमावस्या तिथि दिन में 2 बजकर 40 मिनट से लग रही है. इससे पहले चतुर्दशी तिथि है. इस कारण से दीपावली 31 तारीख को ही इस वर्ष मनाई जाएगी. दीपावली के त्योहार पर महारात्रि में अमावस्या तिथि होनी ही चाहिए. इसमें उदया तिथि की मान्यता नहीं होती और 1 नवंबर 2024 को शाम के समय अमावस्या तिथि नहीं मिल रही है. यह प्रात: समाप्त हो जाएगी. ऐसे में 1 नवंबर को दिवाली सेलिब्रेट करना शास्त्र संवत शुभ नहीं माना जाएगा. शास्त्रानुसार, 31 अक्टूबर को ही दिवाली मनाना शास्त्र संवत है. सामान्य भाषा में कहें तो कोई भी पर्व पूर्व प्रदोष काल वाले तिथि में ही मनाया जाता है. इसी तरह दीपोत्सव हमेशा से ही प्रदोषव्यापिनी अमावस्या तिथि में ही मनाई जाती है. ऐसे में उदया तिथि से कोई मतलब नहीं होता. ऐसे में जिसके भी मन में दिवाली की तारीख को लेकर आशंका की स्थिति बनी हुई है, वे किसी भी तरह के भ्रम में न रहें और 31 अक्टूबर को धूमधाम से बड़ी दीपावली ( ) सेलिब्रेट करें. शुभ दीपावली कि पूजन का शुभ मुहूर्त इस बार लक्ष्मी पूजा का शुभ मुहूर्त 31 अक्टूबर 2024 को शाम 5 बजे से लेकर रात के 10 बजकर 30 मिनट तक है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को समुद्र मंथन के दौरान लक्ष्मी जी का जन्म हुआ था.

बीएसएफ ने सोने की तस्करी के प्रयास को किया विफल

भारत-बांग्लादेश सीमा पर 1.98 करोड़ के सोने के साथ तीन किसान गिरफ्तार

मुर्शिदाबाद : बीएसएफ दक्षिण बंगाल सीमांत की 73 वीं बटालियन की सीमा चौकी इंडिया वन के सजग जवानों ने सोने की तस्करी को विफल कर तीन किसानों को 15 सोने के बिस्कुटों व 08 सोने के टुकड़ों के साथ गिरफ्तार किया। किसान इन सोने के बिस्कुटों व टुकड़ों को साइकिल के फ्रेम में छुपा कर बांग्लादेश से भारत में अवैध रूप से लाने की फ़िराक में थे। जब्त सोने का कुल वजन 2.75 किलो है और अनुमानित बाज़ार मूल्य 1,98,000,00/- रुपए है। जानकारी के अनुसार 73 वीं बटालियन की सीमा चौकी इंडिया वन के जवानों ने सटीक खुफिया जानकारी पर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के पास से खेती कर वापिस आ रहे संदिग्ध किसानों और उनकी साइकिलों की तलाशी ली। जांच के दौरान, बीएसएफ जवानों ने 03 भारतीय किसानों से 15 सोने के बिस्कुट और सोने की 08 सोने के टुकड़े बरामद किए। सभी सोने के बिस्कुट और सोने के टुकड़े साइकिलों के फ्रेम में छुपाये गए थे। पकड़े गए तीनों किसानों और जब्त किये गए सोने को आगे की प्रक्रिया के लिए बीओपी इंडिया-1 लाया गया। पूछताछ के दौरान पकड़े गए व्यक्तियों ने खुलासा किया कि बांग्लादेश के राजशाही के ग्राम बुध पारा के किसी अज्ञात बांग्लादेशी नागरिक से सोने की खेप लेने के बाद एक साइकिल के फ्रेम में 12 सोने के टुकड़े और दूसरी साइकिल के फ्रेम के अंदर 11 सोने के टुकड़े छुपा दिए गये। उन्हें वे सोने की खेप बीएसएफ डोमिनेशन लाइन पार करने के बाद किसी अज्ञात बस कंडक्टर को सौंपना था, जो खेप लेने के लिए सेखपारा क्षेत्र में लगभग 07 बजे संध्या में आने वाला था। खेप की डिलीवरी के बाद प्रति सोने के टुकड़े पर 500 रुपये देने का आश्वासन दिया गया था। लेकिन बीएसएफ ने उन्हें पहले ही सोने के साथ गिरफ्तार कर लिया। सभी गिरफ्तार व्यक्तियों और जब्त सोने को आगे की कानूनी कार्यवाही के लिए सम्बन्धित महकमे को सौंप दिया गया है। सफल ऑपरेशन पर बोलते हुए, दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के जनसंपर्क अधिकारी श्री नीलोत्पल कुमार पांडे, ने कर्मियों के प्रयासों की सराहना की और तस्करी गतिविधियों पर नकेल कसने के लिए की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने सीमावर्ती निवासियों से आग्रह किया कि वे सोने की तस्करी से संबंधित किसी भी जानकारी को बीएसएफ की सीमा साथी हेल्पलाइन 14419 पर रिपोर्ट करें या 9903472227 पर व्हाट्सएप के माध्यम से जानकारी साझा करें। उन्होंने आश्वासन दिया कि सूचना देने वालों को पुरस्कृत किया जाएगा और उनकी पहचान गोपनीय रखी जाएगी।

मिट्टी के दीयों की दुगुनी डिमांड, जोर-शोर से जुटे कारीगर

कोलकाता : दुर्गा पूजा समापन के बाद अब दीपोत्सव की तैयारियां शुरु हो गयी हैं. जहां सदियों पुरानी परंपरा से हटकर लोग रंग-बिरंगी लाइटों से अपने घर और मुहल्ले रोशन करने पर अधिक जोर देने लगे थे. इससे मिट्टी के बने दीयों की मांग दिन प्रतिदिन घटती जा रही थी. लेकिन पिछले कुछ वर्षों से वोकल फॉर लोकल अभियान के तहत चाइनीज सामान के बहिष्कार और अपने देश निर्मित सामान के उपयोग में दिलचस्पी बढ़ने से मिट्टी के दीयों की मांग बाजार में बढ़ती जा रही है.गत वर्ष की अपेक्षा इस साल भी मांग अधिक होने से कारीगर मिट्टी के दीये तैयार करने में काफी व्यस्त हैं.कोलकाता व हावड़ा के कई कुम्हारपाड़ा में 100 से अधिक कारीगर रहते हैं, जो दीपावलीआने पर दीये तैयार करते हैं. एक कारीगरों ने बताया कि गत साल की तुलना में इस साल दीयों की मांग में 10 प्रतिशत की वृद्धि देखी जा रही है. हावड़ा लिलुआ भट्ट नगर के रहने वाले कारीगर राजेश प्रजापति ने बताया कि पिछले साल से इस साल मांग अधिक है.

मौसम व महंगाई की मार झेल रहे हम कारीगर तैयार कर रहे हैं दीप उत्सव के लिए मिट्टी के दीये : राजेश प्रजापति समेत अन्य कारीगरों ने बताया कि मिट्टी का दाम काफी अधिक हो गया है. वे लोग गंगा से डायमंड हार्बर और कैनिंग से मिट्टी लाते है. पहले प्रति गाड़ी 10 हजार लगता था, अब ये कीमत बढ़कर 13 हजार से 15 हजार रुपये हो गया है. वहीं, मौसम ने भी परेशान कर रखा है. एक कारीगर ने बताया कि मौसम के कारण दीयों को सुखाने की चिंता अधिक है. रोज रोज बारिश जल जाते हैं जोक बल्ब की रोशनी पर नहीं होती. साथ ही इसका आर्थिक फायदा भी है. इस धंधे से जुड़े लोगों को रोजगार भी मिलता है.

भी काम में खलल डाल रही है. कारीगरों का कहना है कि थोक बाजार में एक हजार मिट्टी के दीपक की कीमत और 800 से 900 रुपये है, हमें जितना दिए का कीमत मिलना चाहिए था उतना नहीं मिल रहा है चाइनीस लाइट की वजह से.

मिट्टी का दीया जलाने का धार्मिक महत्व : मिट्टी के दीये का धार्मिक महत्व भी है. पूजा-पाठ से लेकर हर शुभ कार्य में मिट्टी के दीपक जलाये जाते हैं. मान्यता है कि मिट्टी के दीये से निकलने वाली रोशनी लोगों के जीवन में खुशियों का प्रतीक है. दीये जलाने से बरसात के बाद उत्पन्न तरह-तरह के कीड़े-मकोड़ों की उत्पात अधिक होने लगती है और दिये जलाने से इसमें

धनतेरस पर सोना खरीदने का सबसे शुभ समय और मुहूर्त जाने

कोलकाता : इस साल धनतेरस का मुहूर्त विशेष रूप से शुभ है क्योंकि त्रिपुष्कर योग बन रहा है, जो यह दर्शाता है कि इस दिन किए गए कार्यों का फल तीन गुना होगा। धनतेरस, जो कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी पर मनाया जाता है, को धन त्रयोदशी भी कहा जाता है। इस दिन सागर मंथन से धनवंतरी का प्रकट होना मान्यता है, इसलिए इसे उनकी जयंती के रूप में मनाया जाता है। महिलाएं इस दिन प्रदोष का व्रत भी रखती हैं और भगवान शिव की पूजा करती हैं। धनतेरस इस बार 29 अक्टूबर (मंगलवार) को मनाया जाएगा। त्रयोदशी तिथि सुबह 10:31 बजे से शुरू होकर 30 अक्टूबर को दोपहर 1:15 बजे तक रहेगी।

धनतेरस का शुभ मुहूर्त : पूजा का सही समय केवल 1 घंटे 41 मिनट का है, जो शाम 6:31 बजे से रात 8:13 बजे तक है। प्रदोष काल का समय शाम 5:38 बजे से रात 8:13 बजे तक है।

सोना खरीदने का मुहूर्त : सोना खरीदने का शुभ समय 29 अक्टूबर सुबह 10:31 बजे से लेकर 30 अक्टूबर सुबह 6:32 बजे तक है।

त्रिपुष्कर योग और महत्व : धनतेरस पर त्रिपुष्कर योग सुबह 6:31 बजे से 10:31 बजे तक रहेगा। इस दिन इंद्र योग भी सुबह 7:48 बजे तक है। माता लक्ष्मी, कुबेर और धनवंतरी की पूजा इस दिन की जाती है, जिससे जीवन में धन, सुख और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

30 फ्लाइट्स को बम से उड़ाने की धमकी

बड़े ऐक्शन की तैयारी में सरकार, अफवाह फैलाने वालों की खैर नहीं

नई दिल्ली : एअर इंडिया, विस्तारा, इंडिगो समेत कई भारतीय एयरलाइन की 30 से अधिक उड़ानों को बम से उड़ाने की धमकी मिली। सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए एअर इंडिया, इंडिगो, अकासा एयर, विस्तारा, स्पाइसजेट, स्टार एयर और अलायंस एयर की 30 से अधिक घरेलू और विदेशी उड़ानों में बम होने की धमकी मिली है। एक फ्लाइट के शौचालय में एक नोट मिला, जिसमें फ्लाइट में बम होने की बात लिखी हुई थी। इस हफ्ते अब तक भारतीय विमानन कंपनियों की कम से कम 70 उड़ानों में बम होने की धमकी मिली है। हालांकि, ये सभी धमकियां बाद में अफवाह निकलीं।

ऐक्शन मोड में सरकार : नागर विमानन मंत्रालय विमानों में बम होने की धमकी की घटनाओं को रोकने के लिए कड़े नियम लागू करने और दोषियों को नो फ्लाई सूची में शामिल करने की योजना बना रहा है। नियमों में संशोधन करने पर विचार कर रहा है ताकि एयरलाइनों को बम की धमकी देने वाली घटनाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। उधर हवाई यात्रा करने वाले अधिकांश लोगों का कहना है कि सरकार को इस मामले में सख्ती से पेश आने और दोषियों को जल्द से जल्द सजा दिलाने का प्रावधान करना चाहिए। वहीं भारतीय एयरलाइंस कंपनियों को भी इन घटनाओं की वजह से करोड़ों का चूना लग रहा है।

सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए बम की धमकी : विस्तारा ने बताया कि उसकी पांच इंटरनेशनल फ्लाइट्स में सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से बम की धमकी मिली, जिसमें यूके106 (सिंगापुर से मुंबई), यूके 027 (मुंबई से फ्रैंकफर्ट), यूके107 (मुंबई से सिंगापुर), यूके121 (दिल्ली से वैंकॉक) और यूके131 (मुंबई से कोलंबो) शामिल हैं। कंपनी के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, 'प्रोटोकॉल पर अमल करते हुए सभी संबंधित प्राधिकारियों को तुरंत सतर्क किया गया। प्राधिकारियों और सुरक्षा एजेंसियों से प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुसार सभी सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन किया जा रहा है।'

यहां दीवाली से एक दिन पहले होती है उल्लू की पूजा

लखनऊ : शाहजहांपुर के डिग्री कॉलेज से हैरान करने वाला मामला सामने आया है. यहां दीपावली से पहले उल्लू की विशेष पूजा की गई. खास बात यह है कि यहां हर साल उल्लू की पूजा इजरायल और हमास के बीच युद्ध को लेकर की गई है. इस दौरान उल्लू पूजन के जरिए विश्व शांति के लिए प्रार्थना भी की गई. उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में दीपावली से पहले उल्लू की फोटो की विशेष पूजा की जाती है. खास बात यह है कि उल्लू पूजा हर साल डिग्री कॉलेज के कई प्रोफेसर मिलकर करते हैं. इस बार उल्लू की पूजा इजरायल और हमास के बीच युद्ध को लेकर की गई है. इसके बाद सांकेतिक तौर पर उल्लू को नदी में विसर्जित कर दिया गया. उल्लू पूजन के जरिए विश्व शांति के लिए प्रार्थना भी की गई.

अक्टूबर 2016 से सितंबर 2019 तक सामने आई घटनाओं पर क्षेत्र के 19 प्रखंडों में दुनियाभर में सबसे अधिक सुंदरवन में डूबने से बच्चों की होती है मौत : रिपोर्ट

अध्ययन में चला पता, एक से चार वर्ष की आयु के बच्चों की डूबने से होने वाली मौत की दर दुनिया भर में सबसे अधिक सुंदरवन में है।

कोलकाता : पश्चिम बंगाल के सुंदरवन क्षेत्र में एक से चार वर्ष की आयु के बच्चों की डूबने से होने वाली मौत की दर दुनिया भर में सबसे अधिक यानी 243 प्रति लाख आबादी दर्ज की गई है। एक अध्ययन में यह बात सामने आई है। यह आंकड़ा 2016 से 2019 के बीच का है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि इस क्षेत्र में पांच से नौ वर्ष की आयु के बच्चों में मृत्यु दर 38.8 प्रति लाख आबादी है।

यह अध्ययन किया गया था। इन 19 प्रखंडों में से 13 दक्षिण 24 परगना में जबकि छह उत्तर 24 परगना में हैं। यह अध्ययन हाल में प्रकाशित हुआ है। अध्ययन में कहा गया है कि लड़कों और लड़कियों के बीच मृत्यु दर में कोई अंतर नहीं है। अधिकतर बच्चे अपने घरों के 50 मीटर के भीतर तालाबों में डूब गए। घटना के समय उनकी प्राथमिक देखभाल करने वाले लोग घरेलू कामकाज में लगे हुए थे और उनके साथ नहीं थे। तटीय सुंदरवन क्षेत्र में बच्चों डूबने की समस्या की

भयावहता का अंदाजा लगाने के लिए गैर-सरकारी संगठन चाइल्ड इन नीड इंस्टीट्यूट(सीआइएनआइ) ने वैश्विक एजेंसियों रायल नेशनल लाइफबोट इंस्टीट्यूशन (आरएनएलआइ) और द जार्ज इंस्टीट्यूट (टीजीआइ) के साथ साझेदारी के तहत यह अध्ययन किया।

100 से अधिक द्वीपों में फैला है सुंदरवन

भारतीय क्षेत्र में सुंदरवन मैंग्रोव 100 से अधिक द्वीपों में फैला है और यहां करीब 40 लाख लोग रहते हैं। कुल आबादी में बच्चों की संख्या करीब 15.9 प्रतिशत है और उनकी उम्र एक साल से नौ साल तक है। ज्यादातर बस्तियां दूर-दराज में हैं और चिकित्सा सुविधाओं से बेहद दूर हैं। सुंदरवन के जल निकायों में मानसून के दौरान जल स्तर चढ़ जाता है जबकि तटीय क्षेत्र में भी चार से पांच साल के अंतराल में बाढ़ की घटनाएं होती हैं। बच्चों के डूबने की समस्या पर चिंता जताते हुए बंगाल के सुंदरवन मामलों के मंत्री बंकिम चंद्र हाजरा ने कहा कि राज्य सरकार इस समस्या के समाधान का प्रयास कर रही है। हाजरा ने कहा कि यह स्वीकार करने में हमें कोई हिचक नहीं है कि डूबने से बच्चों की मौत के मामले सामने आए हैं। फिलहाल यह विस्तृत रिपोर्ट नहीं है। सुंदरवन के निवासियों को डूबने के खतरे के बारे में उसी तरह जागरूक करना चाहिए जिस तरह उन्हें डेंगू, मलेरिया या बाल विवाह को लेकर जागरूक किया जाता है। यह समय की मांग है। हर साल हम कई युवाओं को डूब कर जान गंवाते देखते हैं। लोगों से इस समस्या के हल के बारे में पूछा जाना चाहिए।

... तो इसलिए इतनी सुंदर और हॉट होती हैं रशियन गर्ल

नई दिल्ली : रशियन गर्ल की सुंदरता एक ऐसा सब्जेक्ट है, जो दुनिया भर में चर्चा का केंद्र बना रहता है. यह सवाल कई लोगों के मन में आता है कि आखिर क्यों रूसी महिलाएं इतनी आकर्षक और सुंदर मानी जाती हैं. इस विषय पर चर्चा करते समय, हमें कई कारकों को ध्यान में रखना चाहिए. रशियन गर्ल की सुंदरता एक ऐसा सब्जेक्ट है, जो दुनिया भर में चर्चा का केंद्र बना रहता है. यह सवाल कई लोगों के मन में आता है कि आखिर क्यों रूसी महिलाएं इतनी आकर्षक और सुंदर मानी जाती हैं. इस विषय पर चर्चा करते समय, हमें कई कारकों को ध्यान में रखना चाहिए, जो रूसी महिलाओं की अद्वितीय सुंदरता को समझने में मदद करते हैं. हम आपको इस खबर में यही बताने कि कोशिश करेंगे कि आखिर रशियन गर्ल सुंदर क्यों होती हैं.

रूस विश्व का सबसे बड़ा देश है और इसके विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग जातीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोग रहते हैं. इस भौगोलिक विविधता के कारण रूसी लोगों में आनुवंशिक मिश्रण अधिक है. यूरोप और एशिया के बीच स्थित होने के कारण, रूस की आबादी में विभिन्न नस्लों और सांस्कृतियों का मिश्रण हुआ है, जिससे उनके चेहरे की बनावट, त्वचा की रंगत और शरीर की संरचना में डायवर्सिटी आई है. यहजेनेटिक डायवर्सिटी ही रूसी महिलाओं की सुंदरता का एक बड़ा कारण मानी जा सकती है.

सर्द मौसम का प्रभाव : रूस का अधिकांश हिस्सा ठंडे और सर्द मौसम से प्रभावित होता है. ठंडे मौसम में त्वचा की प्राकृतिक चमक और कसाव बना रहता है, जिससे महिलाओं की त्वचा कोमल और झुर्रियों से मुक्त दिखती है. इसके अलावा, ठंडा मौसम बालों और त्वचा के लिए भी फायदेमंद माना जाता है, जिससे रूसी लड़कियों की सुंदरता में इजाफा होता है.

सौंदर्य के प्रति जागरूकता और जीवनशैली : रूसी महिलाएं अपनी सुंदरता और स्वास्थ्य के प्रति काफी सजग होती हैं. वे नियमित रूप से व्यायाम, संतुलित आहार और सौंदर्य उत्पादों का इस्तेमाल करती हैं. इसके साथ ही, रूसी संस्कृति में सौंदर्य को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है. रूसी महिलाएं न केवल अपनी त्वचा और बालों की देखभाल करती हैं, बल्कि फैशन, मेकअप और खुद को संवारने में भी रुचि रखती हैं.

प्राकृतिक सुंदरता और आत्मविश्वास : रूसी लड़कियों में प्राकृतिक सुंदरता को बहुत महत्व दिया जाता है. उनके चेहरे की संरचना, जैसे नीली या हरी आंखें, हल्के रंग के बाल और स्पष्ट त्वचा उनके आकर्षण को और बढ़ाते हैं. इसके साथ ही, रूसी महिलाएं आत्मविश्वास से भरी होती हैं, जो उनके व्यक्तित्व को और भी निखारता है.

रतन टाटा के फैन ने सीने पर बनवा ली उनकी तस्वीर

नई दिल्ली : टाटा संस के मानद चेयरमैन रतन टाटा का 9 अक्टूबर को मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में निधन हो गया है। देश के सबसे बड़े उद्योगपतियों में शामिल रतन टाटा के निधन के गम से पूरा देश अब तक नहीं उबर पाया है। उनके निधन के बाद सोशल मीडिया पर अभी श्रद्धांजलि देने का सिलसिला जारी है। लोगों ने रतन टाटा को लेकर अपने विचार भी शेयर किए हैं। अब इस बीच एक शख्स के मन में रतन टाटा के लिए इतना अधिक सम्मान था कि उसने अपनी छाती पर ही उनके चेहरे का टैटू बनवा लिया। जब शख्स से सवाल किया गया कि आखिर उसने ऐसा क्यों किया तो उसने इसके पीछे की वजह भी बताई जो इमोशनल करने वाली है। इससे पता चलता है कि रतन टाटा के लिए लोगों के मन में कितना सम्मान है। इसके साथ ही रतन टाटा वाकई मानवतावादी दृष्टिकोण के कितने धनी शख्सियत थे। शख्स बताता है कि कुछ सालों पहले उसके दोस्त को कैंसर हो गया था। उसने दोस्त के लिए इलाज के लिए कई बड़े अस्पतालों के चक्कर काटे। हर जगह कैंसर का इलाज काफी महंगा था। इसके बाद उसे टाटा ट्रस्ट के बारे में जानकारी मिली। जब उसे यह पता चला कि टाटा ट्रस्ट के माध्यम उसका इलाज फ्री में हो सकता है तब उसने अपने दोस्त को वहां ले जाकर भर्ती कराया। वह वीडियो में बताता है कि वो हर दिन ऐसे कितने जरूरतमंदों की मदद करते थे। रतन टाटा को शख्स ने 'रियल लाइफ गॉड' बताया है।

शख्स आग कहता है कि इतनी मदद तो वो नहीं कर सकता, लेकिन आगे चलकर वो भी रतन टाटा जैसा बनना चाहता है। सोशल मीडिया पर यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। इंस्टाग्राम पर @themustache_tattoo नाम के अकाउंट से इस वीडियो को शेयर किया गया है। शख्स की बातों ने लोगों के दिल को जीत लिया है।

कभी सोचा है पृथ्वी पर ऑक्सीजन 90% हो जाए तब क्या होगा?

नई दिल्ली : विज्ञान को लेकर लोगों के मन में कई अटपटे सवाल हैं. उन्हीं में से एक ये है कि यदि ऑक्सीजन न हो तब क्या है. जिसका जवाब बेहद साधारण है कि ऑक्सीजन न हो तो जीवन संभव नहीं है.सबसे पहले ये समझते हैं कि पृथ्वी के वायुमंडल में विभिन्न गैसें किस तरह से हैं। तो बता दें पृथ्वी पर 78% नाइट्रोजन और 21% आक्सीजन, 0.93% आर्गन और 0.39% कार्बनडाइ ऑक्साइड है। इसके अलावा बाकी एक प्रतिशत में मीथेन सहित कई गैसें हैं। पृथ्वी पर ये गैसें अभी से ही नहीं बल्कि लाखों सालों से हैं और पृथ्वी के पूरे जीवन को इसी की आदत पड़ी हुई है। हालांकि यदि हम आक्सीजन में बदलाव की बात करें तो ये आप भी जानते हैं कि हमारे जीवन के लिए आक्सजीन बेहद जरूरी है। यदि ये आक्सीजन 90 प्रतिशत भी हो जाता है तो पृथ्वी पर भारी मात्रा में नाइट्रोजन की कमी हो जाएगी। जिसका धरती और इंसानों दोनों पर अलग-अलग असर देखने को मिल सकता है। इसके अलावा यदि कार्बन डाइआक्साइड और अन्य गैसों की मात्रा में कमी होने की संभावना नहीं है क्योंकि ये पृथ्वी पर पहले से ही काफी कम है।

स्वत्वाधिकारी 'बात हिन्दुस्तान की' (पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिबपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन न.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-उमेश तिवारी, फोन- 8420899919 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Umesh Tiwari** Mo. 8420899919, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)